Ustad Sabri Khan

Ustad Sabri Khan was born on 21st May, 1927 at Moradabad, UP. He was a renowned musician of India who descended on both sides of his family from a line of distinguished musicians. By virtue of belonging to the Senia Moradabad Gharana, the tradition of his music can be traced to Mian Tansen, the great vocalist in the court of Mughal Emperor Akbar. Khansaheb was initiated into Sarangi playing by his grandfather, Ustad Haji Mohammed Khan and later continued his training under his father Ustad Chajju Khan, both accomplished Sarangi exponents of their time. In addition to his rigorous training, he learnt some important and rare techniques of playing this ancient and difficult instrument from his uncle, Ustad Laddan Khan of Rampur.

Khansaheb had a prodigious command over the Sarangi – bowed instrument, which is considered to be a tough instrument to master in Indian instrumental music. In playing Sarangi, he generated his own style where along with purity of raga, variety of tans, layakari (rhythmic oscillations), alaap-jor the traditional form of Sarangi-playing in its total originality was also present.

The credit of introducing the Sarangi to American and European audiences goes to Khansaheb. He had played the first ever Sarangi and Western violin duet with the renowned Sir Yehudi Menuhin and he was invited as a visiting professor by the University of Washington, Seattle, USA. He toured extensively across the world and performed in various countries. He won respect, admiration and accolades from audiences across the world. Ustad Sahib was one of the musicians from All India Radio who performed for India's Independence on 15th August, 1947 at Parliament House, New Delhi.

When Pt. Jawahar Lal Nehru was ill and he was advised by the doctors to listen to music, it was Ustad Saheb who used to go and perform for him. He was also the favourite of Sardar Vallabh Bhai Patel and former Presidents of India, Sh. V. V. Giri, Shri R. Venkatraman and Sh. A. P. J. Abdul Kalam. In appreciation of his contribution to Classical Music of India, Ustad Sabri Khan received numerous honours and awards, including the Sahitya Kala Parishad Award, UP Sangeet Natak Academy Award, National Sangeet Natak Acedemy Award and the prestigious Padma Shri Award and Padma Bhushan Award from the President of India. He died at the age of 88 on 01 December, 2015 at his home in New Delhi.

The seventh and eighth generations of his family are contributing with the tradition of playing Sarangi in the form of his son, Ustad Kamal Sabri and grandsons Suhail Khan and Nabeel Khan.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Ustad Sabri Khan.

Credits:

Text	: Based on information received from the proponent
Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	: Shri Kamleshwar Singh

उस्ताद साबरी खान

उस्ताद साबरी खान का जन्म 21 मई, 1927 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में हुआ। भारत के इस महान संगीतज्ञ के माता और पिता, दोनों ही, विख्यात संगीतकारों के परिवार से थे। उस्ताद साबरी खान का संबंध सेनिया मुरादाबाद घराने से था। इस संगीत घराने की परंपरा का सूत्रपात मुगल सम्राट अकबर के महान दरबारी गायक मियां तानसेन ने किया था। खान साहब को उनके दादा, उस्ताद हाजी मोहम्मद खान ने सारंगी वादन की कला से जोड़ा और आगे चलकर उस्ताद साबरी खान ने अपने पिता, उस्ताद छज्जू खान का शागिर्द बनकर संगीत की शिक्षा प्राप्त की। उस्ताद साबरी खान के दादा और पिता, दोनों ही, अपने समय के विख्यात सारंगीवादक थे। उस्ताद साबरी खान ने अपने चाचा यानी रामपुर के उस्ताद लड्डन खान से इस प्राचीन एवं कठिन वाद्य यंत्र के कुछ अहम और अनूठे गुर सीखे।

भारतीय वाद्य यंत्रों में सारंगी को अत्यंत कठिन माना गया है और खान साहब को सारंगी पर अद्भुत महारत हासिल थी। सारंगीवादन में खान साहब ने अपनी ही अनूठी शैली विकसित की, जिसमें रागों की शुद्धता के साथ-साथ तानों की विविधता, लयकारी और अलाप-जोर तो था ही, साथ ही, सारंगीवादन का मूल परंपरागत रूप भी मौजूद था।

अमेरिकी और यूरोपीय श्रोताओं को सारंगी से परिचित कराने का श्रेय खान साहब को ही जाता है। प्रख्यात वायलिन वादक, सर यहूदी मेनुहिन के साथ खान साहब ने ही सबसे पहली बार सारंगी पर जुगलबंदी प्रस्तुत की थी और उन्हें अमेरिका के वाशिंगटन विश्वविद्यालय, सिएटल द्वारा बतौर विजिटिंग प्रोफेसर भी आमंत्रित किया गया था। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएं कीं और विभिन्न देशों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विश्वभर के श्रोताओं से उन्हें सम्मान, स्नेह और प्रशंसा मिली। उस्ताद साहब आकाशवाणी के उन चुनिंदा संगीतज्ञों में से थे, जिन्हें भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में 15 अगस्त, 1947 को नई दिल्ली के संसद भवन में सांगीतिक प्रस्तुति देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जब पंडित जवाहर लाल नेहरू बीमार थे और चिकित्सकों ने उन्हें संगीत सुनने की सलाह दी, तो उस्ताद साहब ही उन्हें संगीत सुनाने जाते थे। वे, सरदार वल्लभ भाई पटेल और भारत के पूर्व राष्ट्रपतियों, श्री वी. वी. गिरि, श्री आर. वेंकटरमन और श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के भी पसंदीदा संगीतज्ञ थे। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए उस्ताद साबरी खान को अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। इन प्रमुख पुरस्कारों में साहित्य कला परिषद पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार शामिल हैं और साथ ही उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रतिष्ठित पद्मश्री और पद्मभूषण पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया। 1 दिसंबर, 2015 को 88 वर्ष की आयु में उस्ताद साहब का नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर निधन हो गया।

उनके परिवार की सातवीं और आठवीं पीढ़ी यानी उनके बेटे उस्ताद कमाल साबरी खान और पोते सुहैल खान और नबील खान उनकी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

डाक विभाग, उस्ताद साबरी खान पर एक स्मारक डाक-जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट/ प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/ विरूपण मोहर : श्री कमलेश्वर सिंह

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA
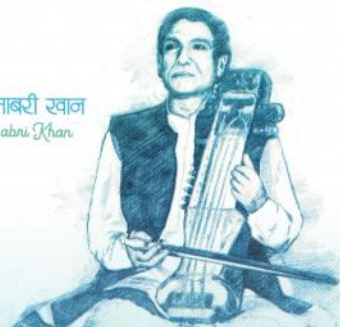
तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: 500 पैसा : 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 5.0 लाख : 5.0 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
https://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹5.00